बेटी का कर्ज

(पुस्तक के कुछ अंश)

"नहीं पापा मैं आपको इस हाल में कदापी नहीं रहने दूंगी। आपको मेरे साथ चलना ही पड़ेगा। ये मेरा हक है पापा की मैं भी आपकी सेवा करू, सिर्फ भैया भाभी नहीं।" हक जताते हुए संजना ने कहा तो पापा उसे आश्चर्य, विस्मय और करुणा के मिश्रित भाव से एकटक देखने लगे। उन्हें सहसा जैसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

दीनदयाल जी ने डाकघर की अपनी छोटी सी नौकरी में जीवनभर जो इकट्ठा किये थे आज वहीं उनके दुःख का कारण बन गया था। शादी के बाद पहली रात में ही पत्नी निर्मला से साफ साफ कह दिया था कि जिस दिन हमारा बेटा होगा, उसी दिन ओ उसे घूंघट उठायी का तोफा मिलेगा। आगे............

"नहीं पापा मैं आपको इस हाल में कदापी नहीं रहने दूंगी। आपको मेरे साथ चलना ही पड़ेगा। ये मेरा हक है पापा की मैं भी आपकी सेवा करू, सिर्फ भैया भाभी नहीं।" हक जताते हुए संजना ने कहा तो पापा उसे आश्चर्य, विस्मय और करुणा के मिश्रित भाव से एकटक देखने लगे। उन्हें सहसा जैसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

दीनदयाल जी ने डाकघर की अपनी छोटी सी नौकरी में जीवनभर जो इकट्ठा किये थे आज वहीं उनके दुःख का कारण बन गया था। शादी के बाद पहली रात में ही पत्नी निर्मला से साफ साफ कह दिया था कि जिस दिन हमारा बेटा होगा, उसी दिन ओ उसे घूंघट उठायी का तोफा मिलेगा।

निर्मला दीनदयाल जी को पुत्र प्राप्ति की ऐसी धृष्ट ईच्छा देखकर मन ही मन सोचती की मैं कैसे इन्हें सिर्फ पुत्र रत्न ही दे सकती हूं। जिसदिन परिवार को पता चला कि ओ माँ बनने वाली है तो पूरा परिवार कहता कि देखना बेटा ही होगा। दीनदयाल जी निर्मला के पेट पर हाथ फेरते हुए कहते, कहीं मेरा बेटा लात तो नहीं मार रहा है।

पहली बार माँ बन रही निर्मला अनजान भय से सहम सी जाती। जिस दिन प्रसव हुआ, निर्मला तो मानो कई मौत मर चुकी थी लेकिन उसे क्या पता था कि उसे अभी और कई मौते मरनी हैं। उसके गर्भ से जन्म हुआ "संजना" का।

पति ने तो मानो बात ही करनी बंद कर दी थी। सासु और ननदो ने तो बात बात पर तानों की शुरुवात कर दी थी। उसकी बेटी का कोई नामकरण भी नहीं कर रहा था। कुछ दिनों के लिए मायके से आने के बाद जब संजना की तोतली बातें सबको रिझाने लगी तब धीरे धीरे माहौल कुछ सामान्य हुवा था। दूसरी बार माँ बनने के बाद घर वाले बेटा का नाम नहीं ले रहे थे तो निर्मला को एक खुशी मिली कि शायद संजना ने इस घर में जन्म लेकर सबकी सोच को बदल दिया है लेकिन ओ उस दिन फिर एक मौत मरी जिसदिन दवा के बहाने उसका अस्पताल में गर्भपात करा दिया गया। गर्भपात होने के बाद उसे पता चला कि ओ बेटी थी। उससे बोला गया कि उसके में ही कमी थी जिसके वजह से गर्भ नहीं रुका। ओ सपने में, कल्पनाओ में अपने बेटी के चेहरे को बनाती, उसे दुलारती, हंसाती और फिर खुद रोने लगती।

अब जब तीसरी बार उसे बेटे की चाहत में गर्भ गिराया गया था तो उसने रोया नही और ना ही कभी फिर हंसी। सिर्फ खोयी रहती थी खुद में मानो उसके ऊपर तीन तीन कत्लों का इल्जाम लगा हो। पांचवी बार जब उसे गर्भ हुआ और गर्भपात नहीं कराया गया तो उसे लगा कि शायद इसबार उसे बेटा होगा। उसने अपने इष्ट देव से प्रार्थना की कि उसे बेटा का मुख देखने से पहले उठा लें। और हुआ भी यहीं।

अपने बेटे शशांक के जन्म के समय ही उसने अपने शरीर को त्याग दिया। पूरा परिवार निर्मला के जाने के गम से ज्यादा बेटा पाने में खुश था।

शशांक एकलौता और लाडला था। उसे उस घर के सामर्थ्य से ज्यादा खुशियां देने की कोशिश होती रहती थी। जबकि संजना किसी तरह रो धोकर बीएड कर पाई। शशांक को विदेश भेजने में दीनदयाल जी ने अपने जीवनभर की सारी कमाई लगा दी थी। उसके सपनो को पूरा करने के लिए अपने सारे सपने जला दिए थे। ओ अपने रिश्तेदारों और जानपहचान वालों को दिखाना चाहते थे कि कैसे बेटे को पढ़ाया जाता है। जब सब कहते कि आपका बेटा इतना कमायेगा कि आपके जीवन के सारे सपने एक झटके में ही पूरा कर देगा तो ओ मन ही मन फुले न समाते। बीएड के बाद भी संजना पढ़ना चाहती थी लेकिन दीनदयाल जी ने पैसे की तंगी की बात करके उसकी पढ़ाई बंद करवा दी और बिना उससे पूछे उसकी शादी भी कर दी। संयोगवश संजना का परिवार और उसके पति काफी अच्छे थे । संजना ने जल्द ही अपने अच्छे संस्कारों और गुणों से सबका दिल जीत लिया था। पति के सहयोग से उसने अध्यापक की पात्रता परीक्षा की तैयारी शुरू की और पहले प्रयास में ही ओ एक अध्यापिका बन गई।

शशांक के लंदन जाने, संजना की शादी हो जाने के बाद दीनदयाल जी काफी अकेला महसूस करने लगे थे। घर में कोई भी नहीं था। माँ गुजर गयीं थीं। वे भी अब रिटायर हो गए थे। घर तो बहुत बड़ा बना नहीं पाए थे लेकिन ओ छोटा सा घर भी उन्हें मानो चिढ़ा रहा था।

एक दिन उन्होंने ये बात फोन पर अपने बेटे शशांक से बताई तो उसने साफ मना कर दिया। बोला कि पापा अभी उसकी उम्र ही क्या है और अभी तो उसे अपनी लाइफ में और भी बहुत कुछ जरूरी काम करने हैं। दीनदयाल जी कुछ कह नहीं पाए थे । आज उन्हें लगा था कि काश तीन बेटियों

की हत्या न कि होती तो कुछ कुछ टाइम सबके पास जाके अच्छे से गुजर जाता। संजना के पास अब उन्हें जाने में शर्म आती थी। उन्हें संजना के साथ जीवनभर किये अपने सारे ब्यवहार याद आ जाते थे।

कुछ दिनों बाद जब शशांक घर आया तो दीनदयाल जी ने उससे शादी की जिद की। बाप के जिद पर शशांक ने बताया कि ओ किसी लड़की से प्यार करता है और उसी से शादी कर सकता है और किसी और से नही। दीनदयाल जी के पूरे खानदान में कोई लवमैरिज नहीं किया था लेकिन उन्होंने अपने दिल पर पत्थर रखकर उसे शादी के लिए सहमति दे दी थी।

आज भैया दूज पर घर आई थी संजना। पिता को सुबह उठकर खुद चाय बनाते, उनका बिस्तर खुद के घर के स्टोर रूम में लगा हुआ देखकर उसे सारी असलियत का अनुमान हो गया था। पड़ोस से पता चला कि शशांक एकबार उन्हें बृद्धाश्रम भेजने की धमकी दे रहा था तब से दीनदयाल जी किसी से भी कुछ बातें नहीं करते थे और ना ही अब ज्यादा बाहर निकलते थे। पूरी दुनिया अब उन्हें ठगने वाली लग रही थी। बार बार यहीं सोचते थे कि तीन तीन बेटियों की हत्या का ही फल तो नहीं ये।

आज जब संजना ने उनकी सेवा करने का हक मांगा तो उन्हें लगा जैसे एक पापी बाप को उसके पापों से मुक्ति मिल गयी हो। आज दिल और आंखे दोनों रो रही थी। बेटी को पहली बार गले से लगाया । माफी मांगने वाली मुद्रा में हाथ जोड़ते हुए बोले " बेटी मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। आखिर इसी दिन के लिए ही तो मैंने तीन बेटियों को गर्भ में मारा था। मुझे मेरे पापों के फल भोग लेने दो बेटी।"

"नही पापा, आपने बहुत भोग लिया, अब और नहीं।"

दीनदयाल जी आज अपनी ही बेटी के कर्जदार हो गए थे। आज दीनदयाल जी के जीवन में खुशियां है और जीने का एक मकसद भी। बेटियों के प्रति उनकी जागरूकता रैलियों, सभाओ, गोष्ठियों आदि को देखकर सरकार ने उन्हें उनके शहर का

" बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।"

कैम्पेन का ब्रांड एंबेसडर बनाया है।